हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय (III)
पत्र संख्या :- VIII

भारत-दुर्दशा :- तात्विक विवेचन

नाटक में एक सुगठित कथा के माध्यम से मानव-चरित्र को स्पष्ट किया जाता है। अतः मानव के स्वभाव, गुण-रुचियों एवं कार्य-व्यापारों का इसमें अन्तर्मन के तलस्पर्शी अध्ययन से संतुष्ट चित्रण अपेक्षित है। इस नाटक में मानव-चरित्र एवं उनके कार्य-व्यापारों अधिकाधिक सजीव स्पष्ट स्वभाविक एवं कलापूर्ण चित्रण होता है। पात्रों की सजीवता स्वतंत्रता और शीलता नाटक का प्राण है। प्रतीक नाटक में कुछ विशिष्ट भावनाओं अथवा विकारों को मूर्त प्रदान करने के उद्देश्य से उनमें मानव चरित्र का आरोपण किया जाता है। 'भारत-दुर्दशा' नाटक में आंग्लशासन में भारतवर्ष की दयनीय एवं निरीह अवस्था का चित्रण प्रतीकात्मक रूप में ही सफलता पूर्वक किया जाता है इसमें यद्यपि देश की दुर्दशा के प्रधान कारणों को व्याख्यायित किया गया है किन्तु समस्त परिस्थितियों को मानवीय स्वरूप देकर लेखक ने उनको साकार रूप में व्यवस्थित ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।

'भारत-दुर्दशा' की नाटकीय तत्वों के आधार पर समीक्षा करेंगे। सामान्यतः नाटक के सात प्रमुख तत्व माने जाते हैं। कथावस्तु, पात्र एवं इनका चरित्रांकन, संवाद, देश काल एवं वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य तथा अभिनेता। इन तत्वों में नाटक ही अनिवार्य तत्व माना जाता है किसी भी नाटक कला का मूल्यांकन भी इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखकर किया जाता है। भारत-दुर्दशा' में इन तत्वों का निर्वाह किस सीमा तक और किस रूप में हुआ है

कथावस्तु:- 'भारत-दुर्दशा' नाटक में उन्नीसवीं शदी में आंग्ल शासन द्वारा भारत पर किए जा रहे अत्याचारों, भारतवर्ष की निर्धनता, दयनीयता अज्ञान रोगग्रस्तता एवं आदि को प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है। प्रारंभ में एक 'योगी' भारत के अतीत का बखान करते हुए उसकी वर्तमान दुर्दशा का भावपूर्ण वर्णन करता है। इसके बाद मंच पर भारत अपनी वर्तमान परिस्थितियों पर ज्यों ही अश्रुपात करता है भारत दुर्दैव का विकराल स्वर सुनाई देता है। जिसे सुनते ही मूर्छित हो जाता है लज्जा और आशा उसे उठाकर ले जाती है तथा भारत दुर्दैव मंच पर आकर अपने प्रमुख सेना नायकों, सत्यानाश, रोग, अंधकार, मदिरा एवं आलस्य आदि को स्तुति करके उन्हें भारत पर कठोर आक्रमण करके जर्जर कर देने की आज्ञा देता है। इसी प्रसंग में उपर्युक्त सभी पात्र अपनी विशेषताओं को भी वर्णित करते हैं। फिर मंच पर घने और क्लान्तवन वन के बीच भारत मूर्छित दिखाई देता है। उसका परम मित्र 'भारत भाग्य' उसे चैतन्य करने का अनथक प्रयास करता है उसके अतीत के गौरवशाली परम्परा का बखान करते हुए उसकी वर्तमान दयनीय दशा पर अश्रुपात करता है किन्तु भारत फिर भी चैतन्य नहीं होता। अन्ततः भारत भाग्य' प्रायश्चित स्वरूप आत्महत्या का मार्ग अपनाता है और अपनी छाती में छुरा भोंक लेता है। इसी दुःखांत वातावरण में कथा का अंत होता है जिसे नाटककार भारतेन्दु जी ने अत्यन्त आकर्षक, यथार्थ परक एवं मार्मिक धरातल पर चित्रित किया है। सम्पूर्ण कथानक प्रतीकात्मक होते हुए भी संगठित, पारस्परिक सम्बन्ध और सूत्र में बंधा हुआ है। जिससे कथानक में कहीं भी विच्छिन्नता नहीं आ पाती। सम्पूर्ण भारत-दुर्दशा की कथावस्तु आद्यन्त सुसम्बद्ध सूत्रबद्ध और मार्मिक एवं प्रभावी है और इस दृष्टि से नाटक निःसन्देह सफल रहा है।

नाटक में पात्रों एवं उनके चरितांकन का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बिना पात्रों के नाटक की रचना ही सम्भव नहीं है और यदि उनका सम्यक चरितांकन करने में नाटककार सफल रहता है तो वह नाट्यकृति ही असफल हो जाती है। 'भारत-दुर्दशा' नाटक में भारतेन्दु जी पात्रों का उचित चयन एवं उनका चरितांकन करने में सफल रहे हैं। इन्होंने तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों को प्रतीक पात्रों के माध्यम से सफलता पूर्वक सम्प्रेषित किया है।

नाटक में संवाद तृतीय उपकरण है किन्तु महत्व की दृष्टि से प्रथम दोनों से कम नहीं है। नाटककार अपने मंतव्य को संवादों के बिना सम्प्रेषित नहीं कर सकता। वह अपनी ओर से कुछ भी कहना चाहता है। पात्रों के कथनों से ही कह सकता है। इस प्रकार संवादों का सीधा सम्बन्ध पात्रों के चरित्र चित्रण और कथावस्तु के विकास से है। भारत-दुर्दशा के उपर्युक्त संवाद को इस दृष्टि से देखा जा सकता है कि जिसके द्वारा पात्रों का चित्रांकन तो हुआ ही है। साथ ही कथानक को एक रोमांच मोड़ भी मिलता है। जिसके कारण दर्शक पाठक उत्सुकता निरन्तर बढ़ती जाती है।

नाटक की कथावस्तु को सजीव एवं सप्राण बनाने में देशकाल अथवा वातावरण की भी अपना निजी महत्व है। 'भारत-दुर्दशा' नाटक की कथावस्तु उन्नसवीं सदी के अन्तिम चरण में भारत पर किये जा रहे आँग्लशासन के अन्यायों अत्याचारों की व्यथाकथा है। तत्कालीन सामाजिक अंधविश्वासों अज्ञान, अंध धार्मिकता एवं दैवी कोप को लेखक ने प्रतीक पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है और तत्कालीन वातावरण

एवं सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेश को उजागर कर दिया है। आतंक, दुर्दैव एवं सत्यानाश फौजदार के निम्नलिखित संवाद में तत्कालीन भारतीय परिवेश अपनी सम्पूर्णता के साथ स्पष्ट हो जाता है।

प्रस्तुत कर्ता

दिनांक
04/09/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292271041
ईमेल :- benamkumar13@gmail.com